हम सभी आत्माएँ सद्भागी हैं जो जीवंत सद्गुरु - परम पूज्य (श्री शिवकृपानंद स्वामीजी) के साथ उनके जीवनकाल में जी रहे हैं। जीवंत सद्गुरु विश्वचेतना के "देहधारी" माध्यम होते हैं। परम पूज्य स्वामीजी न केवल जीवंत सद्गुरु हैं अपितु कई सद्गुरुओं की शुद्ध इच्छा से उनकी पवित्र देह का निर्माण हुआ है - हम एक "युगपुरुष" के साक्षात सान्निध्य में हैं! किन्तु वे भी मनुष्य देहधारी हैं और मनुष्यशरीर की अपनी कुछ मर्यादाएं एवं आवश्यकताएँ भी होती हैं। वे तो दैहिक क्षमताओं से उपर उठकर सदैव कार्यरत रहते ही हैं किन्तु हमारा यह कर्तव्य है कि उस अति पवित्रतम देह का रखरखाव योग्यरूप से हो। उस महान आत्मा को देह में विराजमान रहने के योग्य वातावरण प्रदान करें।

जैसे कि परम पूज्य स्वामीजीने शिर्डी महाशिबिर के बाद "महाशिबिर का आनंद" - संदेश में लिखा है कि - "आत्मा को भी अनुकूल वातावरण चाहिये अन्यथा वह कभी भी शरीर छोड़कर जा सकती है। इसलिये लगता है कोई भी "माध्यम" की कभी भी मृत्यु न हुयी होगी प्रत्येक माध्यम ने उसके आसपास निर्माण प्रतिकूल वातावरण के कारण ही देहत्याग किया होगा तो माध्यम का "जिवन" तो उसके शिष्यों के हाथ में ही होता है की वे माध्यम को कितने समय उसकी "आत्मा" के अनुकूल वातावरण दे पाते हैं क्योंकि सामान्य मनुष्य जैसी "माध्यम" की मृत्यु नहीं होती। "माध्यम" शरीर दिखता है लेकिन वह शरीर कभी भी होता ही नहीं है। वह एक पवित्र आत्मा होता है, जिसको अपने अनुकूल वातावरण लगता है तभी वह शरीर में रहता है। अब अनुकूल वातावरण शिष्यवर्ग कब तक दे पाता है, इसी पर "माध्यम" का जीवन निर्भर रहता है। याने माध्यम की मृत्यु शिष्यों के कारण ही होती है। क्योंकि माध्यम को सर्वसाधारण मनुष्य जैसा देह का आकर्षण नहीं होता है। जब तक आत्मा को देह का उपयोग दिखता है, तभी तक वह शरीर में रहती है क्योंकि शरीर के बाहर जाकर रहने की उसको "साधना" होती है और सदैव शरीर में वापस आना या न आना यह निर्णय "आत्मा" स्वयंम् लेती है। अगर परसों शाम आत्मा वापस शरीर में नहीं आती तो वह

(Contd.)

देह की "मृत्यु" ही थी। लेकिन वापिस आयी याने इस देह का और भविष्य में उपयोग होनेवाला होगा। यह स्थिति में गहन ध्यान अनुष्ठान में 45 दिन देह रहता है। याने देह इस स्थिति का अभ्यस्थ है। इस स्थिति में जाया तो बड़ी आसानी से जाता है। लेकीन इस स्थिति बाहर आना कठीन होता है।"

इस संदेश से सुस्पष्ट है कि माध्यम को देह में रहने के अनुकूल वातावरण देना शिष्यों का परम कर्तव्य है।

यह लेख विशेषरूप से पदाधिकारी -कार्यकर्ता -कमेटी मेम्बर्स एवं जो भी परम पूज्य स्वामीजी से मिलते हैं उनको नम्र विनंती करने के लिए हैं। क्योंकि किसी को व्यक्तिगत रूप में बताऊंगी तो बूरा लगेगा, इसलिये लेख के रूप में बता रही हूं! फिर आप मत कहना कि हमें उनके देह के संबंधित बताया नहीं! इस विषय में मैंने पहेले भी लेख की रूप में सूचित किया है आज पुन: कर रही हूं। क्योंकि उनको हम जो अनुकूल वातावरण मिलना चाहिए वो नहीं दे पा रहे हैं। एक डॉक्टर साधिका होने के कारण बताना मेरा कर्तव्य है।

परम पूज्य स्वामीजी -'माध्यम' हैं, किन्तु जीवंत -देहधारी हैं! उनकी देह दिखती सामान्य है, लेकिन उनके सान्निध्य में हो रहे बड़े बड़े कार्यक्रम और कार्यों से पता चलता है कि वे सामान्य देह की क्षमताओं से परे कार्यरत हैं। सामान्यरूपसे हम -सामान्य मनुष्य भी किसी भी बड़े प्रवास या कार्यक्रम या भाषण के बाद विश्राम की आवश्यकता महेसूस करते हैं वैसे ही परम पूज्य स्वामीजी को भी हम से ज्यादा एकांत की आवश्यकता किसी भी बड़े कार्यक्रम से पहेले एवं बाद में होती है। उनके सान्निध्य में हमें अच्छा लगता है! मतलब हमारा बूरा कहीं तो भी जा रहा है! और बड़े कार्यक्रमों में तो एकसाथ हजारों लोगों को उनके सान्निध्य में अच्छा लगता है और वे अनुभूति को प्राप्त होते हैं। विशेषरूप से बड़े कार्यक्रमों के बाद उनके शरीर में गर्मी बढ़ जाती है एवं स्नायुओं में गठ्ठों की तकलीफ होती है। जो थोड़े समय के एकांत -विश्राम एवं योग्य रखरखाव के बाद ठीक हो जाती है। इसलिए -बड़े कार्यक्रमों से पहेले एवं बाद में कम से कम

१० दिन एकांत एवं विश्राम की आवश्यकता होती है। उस समय के दौरान हमें न तो उनसे मिलना चाहिए और न ही उनके चित्त तक कोई बात पहुँचानी चाहिए।

किन्तु ऐसा देखा गया है कि बड़े कार्यक्रमों के तुरन्त बाद मीटींगे होती हैं। जैसे कि अभी हाल ही में ८ दिवसीय शिर्डी - अखिल समर्पण ध्यान महाशिबिर (जो कि ५ साल बाद हुआ) - उसके तुरन्त बाद दूसरे ही दिन सुबह पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की मीटींग रखी गई थी। जबकि शिर्डी - महाशिबिर के अंतिम दिन परम पूज्य स्वामीजीने अत्यन्त उच्च स्थिति में ध्यान लिया था। ऐसे समय वे तुरन्त दूसरे दिन ही meeting लेने की स्थिति में नहीं होते हैं। और श्री परम पूज्य स्वामीजी तो उसी उच्च अवस्था में थे - उसका प्रमाण श्री जंगली महाराज आश्रम में घटित हुआ अद्भुत ध्यान है। जिसका अनुभव परम पूज्य स्वामीजीने संदेश में बताया है। अत: वे तो हर समय उस उच्च स्थिति में ही रहते हैं।

परम पूज्य स्वामीजी मंच (स्टेज) की स्थिति से उतरकर तुम्हारे पास आते हैं - तुम कौन सी स्थिति में जाते हो? अच्छी स्थिति में जाते हो तो उनके सामने झघड़ते नहीं न! मुजे बहुत बुरा लगा एसी स्थिति में शिर्डी महाशिबिर के तुरन्त बाद दि-२६।१।२०१३ को मीटींग लेनी पड़ी! और मीटींग में पदाधिकारी - कार्यकर्ता लड़ते - झघड़ते हैं - तो उनसे मीटींग करने की क्या आवश्यकता है? परम पूज्य स्वामीजी से शिकायत है तो ही उनको मीटींग में लो अन्यथा आपस में शिकायत है तो बैठ के निबटाओ न! जो व्यक्ति एक २४ घण्टे भी नहीं हुए उसके पहले हज़ारों लोगों को trans में ले जा सकता है उसी के साथ २४ घण्टे भी पूरे नहीं हुए एसी मीटींगे हुई! ऐसे आपसी मनमुटाव के कारण उस पवित्र देह पे दुष्परिणाम होते हैं।

जैसे हमारे पास एक चीज कम है तो उसको संभाल संभालकर इस्तेमाल करते हैं। या तो अपने पास पैसे कम रहते हैं तो संभाल संभालकर उपयोग करते हैं - तो अपने पास तो एक ही पैसा है, एक ही परम पूज्य स्वामीजी हैं। और वे स्वयं भी किसी एक साधक पर ज्यादा कार्यभार न आये उसका ध्यान

रखते हैं। जैसे कोई वाहनचालक (driver) एक दिन मुंबई गया हो तो तुरंत वापिस उससे driving नहीं कराते - उसको भी रात्रि में आराम देते हैं। वो वाहनचालक (driver) तक का ध्यान रखते हैं लेकिन हम उनका ध्यान नहीं रखते हैं! उनको जो मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है - न कार्यक्रम से पहले न कार्यक्रम के बाद।

परम पूज्य स्वामीजी को किसी भी बड़े कार्यक्रम के बाद जो एकांत और Rest (आराम) मिलना चाहिए वो नहीं मिल रहा है जिसके शरीर पे दुस्परीणाम होते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में भी आजकल इस विषय में संशोधन हो रहे हैं - व्यक्ति के भावनात्मक असंतुलन एवं विचारों के कारण नकारात्मक ऊर्जा शरीर के स्नायूओं में कणों के गट्ठों के रूप में एकत्रित होती है। इसका प्रभाव चयापचय एवं अन्य प्रणालीओं पर भी होता है। जब ऐसी स्थितिमें हम परम पूज्य स्वामीजी से मिलने जाते हैं तो यह ऊर्जा सीधे ही उनके स्नायूओं में गट्ठों के रूप में रूपांतरित हो जाती है। बाद में उनके शरीर से गट्ठे दूर होते समय कुछ कण भी स्नायू से निष्कासित होने प्राप्त होते हैं एवं पुनः शरीर सामान्य हो जाता है! इसके अलावा नकारात्मक विचारोंके कारण उनकी देह में गर्मी की भी तकलीफ होती है।

जैसे कोई स्कूटर ज्यादा चलाते हो तो भी सर्विसिंग के लिए भेजते हो तो body (देह) को नहीं! परम पूज्य स्वामीजी के शरीर को भी आराम की आवश्यकता रहती है! इसलिए मेरी नम्र बिनती है जो पदाधिकारी - कमिटी-मेम्बर्स - कार्यकर्ता एवं जो भी उनसे मिलते हैं - कृपया किसी भी बड़े कार्यक्रम से पहले १० दिन पहले और १० दिन बाद में उनसे मिलें ही नहीं।

कितने अनिश्चित वातावरण में शिर्डी - महाशिबिर हुआ, - बाद में भी ठीक वातावरण नहीं था फिर भी शिबिर सर्वोत्कृष्ट हुआ! कार्यक्रम से पहले भी परेशानी थी और कार्यक्रम के बाद में भी परेशानी थी - फिर भी महाशिबिर का कार्यक्रम तो पहले से भी अच्छा रहा! इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि पहले की महाशिबिर २ घण्टे की थी और यह महाशिबिर ३ घण्टे चैतन्य का लाभ एवं प्रवचन मिला। मतलब इतनी विपरीत परिस्थितिओं में भी शरीर की

क्षमताओं से ज्यादा कार्य हुआ !

परम पूज्य स्वामीजी कोई ऑरकेस्ट्रा पार्टी तो नहीं हैं कि - २६ लोग मंच पर एक साथ कार्यक्रम दे रहें हों। उनका कार्यक्रम तो उनके - एक ही व्यक्ति पर पूरा कार्यक्रम आधारित रहता है - One Man show या One Man Army की तरह ! एसे समय किसी भी मशीन को भी मेंटमेंस की आवश्यकता रहती है तो क्या जीवंत देह को नहीं ! फिर भी मुजे एसा अनुभव आया है कि कितने भी बड़े कार्यक्रम के बाद उनको आराम एवं एकांत नहीं मिला है। किसी भी कार्यक्रम से पहले एवं बाद में कम से कम १० दिन का एकांत तो उनको मिलना ही चाहिए।

हम प्रत्यक्षदर्शी हैं कि - ३-३ घण्टा परम पूज्य स्वामीजी प्रवचन देते रहते हैं तब न पानी पीते हैं, न मूत्रत्याग, आदि शरीर की प्राकृतिक क्रियाओं के लिए खड़े होते हैं - और सामने उपस्थित हजारों प्रेक्षकों की भी ये सारी क्रियाएँ बंद हो जाती है ! शरीरक्रिया (Physiology) की दृष्टि से यह एक अनन्य प्रकार है ! इसमें भी शरीर का उपयोग तो हो ही रहा है न ! ३-३ घण्टे बिना किसी विराम के प्रवचन देना और सबमें चैतन्यकी अनुभूति देना कितना अद्भुत कार्य है ! इसमें परम पूज्य स्वामीजी को देह का विशेष उपयोग हो रहा है। अरे, किसी भी car को भी खूब चलाओगे तो आराम की आवश्यकता रहती है, वैसे ही परम पूज्य स्वामीजी के अति पवित्रतम शरीर को भी विश्राम की आवश्यकता रहती है। आयुर्वेद के अनुसार भी - भाषण - बोलनेका कार्य मुख्यरूप से उदानवायु का है एवं - इतने बड़े भाषण के बाद लंबे समय के मौन और चित्त एवं शरीर - मन को विश्राम की आवश्यकता होती है।

ऐसे समय उनसे Meeting मांगना तो दूर की बात मन में इच्छा भी मत करो कि परम पूज्य स्वामीजी आपसे मिलें ! तुमने इच्छा भी की तो वो बुला लेंगे। वास्तव में आप इच्छा करते हो इसलिये वो बुलाते हैं। उनको किसी से मिलने की इच्छा नहीं है। वो तुमको मिलने बुला रहे हैं - मतलब तुम में कहीं सूक्ष्म में इच्छा है ! अपना आत्मपरीक्षण करो - अंदर कहीं

Date

इच्छा है मिलने की ? और फिर भी वो लाख बुलाये तुम आओ ही मत ! वास्तव में तुम इच्छा करते हो इसलिए वो Meeting देते हैं ! वो बुलाये तो भी बड़े कार्यक्रम के बाद १० दिन तक उनको मिलने मत आओ । और बाद में भी उनसे Meeting के पहेले १० दिन ध्यान करके चित्तशुद्ध करके ही मिलो !

प्रत्येक चैतन्य के माध्यम रूप स्थान - मंदिर या समाधिस्थान में भी शुद्धिकरण के लिए कुछ समय एकांत की ~~क~~ योग्य व्यवस्था होती है । तो हमारे परम पूज्य स्वामीजी तो चैतन्य के साक्षात् जीवंत माध्यम है - जीवंत देहधारी हैं उन्हें भी कार्यक्रम से पहेले एवं बाद में एकांत और विश्राम की आवश्यकता है । हिमालय का समर्पण योग - भाग ४ में श्री डॉक्टर बाबाजीने कहा है कि - परम पूज्य स्वामीजीका शरीर ही गुरुशक्तियों का संघ है ! वे एक 'युगपुरुष' हैं ! किन्तु जीवंत देहधारी होने के कारण उनकी संवेदनशीलता हम से कई गुना ज्यादा है । इसलिए उनके आसपास अनुकूल वातावरण देना एवं उनको आवश्यक एकांत देना हम शिष्यों का परम कर्तव्य है ।

पुनः यह लेख मुख्यरूप से पदाधिकारी - कमिटी मेम्बर्स - कार्यकर्ता एवं जो भी उनसे मिलते हैं उनके लिए हैं । उनको ~~सामान~~ बाकी साधकों से कोई तकलीफ नहीं है क्योंकि वे उनसे मिलते नहीं हैं । और पदाधिकारी, कमेटी मेम्बर्स, कार्यकर्ता, इत्यादि समय - समय पर एवं अलग - अलग कार्यक्रमों में बदलते रहते हैं इसलिए यह बात उन सभी के लिए लेख के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ । एक डॉक्टर साधिका होने के नाते बताना मेरा कर्तव्य है, फिर आप न कहो कि हमें उनकी देह के बारे में बताया नहीं ! सभी पदाधिकारीयों - कमेटी मेम्बर्स - कार्यकर्ताओं से करबद्ध बिनंती है कि कृपया इन सब बातों का ध्यान रखकर हमें प्राप्त "युगपुरुष" के सान्निध्य को बनाये रखने में सहयोग करें, इसी आशा के साथ,

अस्तु --

- डॉ - हेतल . आचार्य M.D.